# बिसरि जाएब जरुरी छै

# बिसरि जाएब जरुरी छै

कविता संग्रह

रबीन्द्र नारायण मिश्र

# बिसरि जाएब जरुरी छै

## (कविता संग्रह)

## रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5810-452-3

दाम : 400 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2026

लेखक :रबीन्द्र नारायण मिश्र

प्रकाशक:श्रीमती आशा मिश्र

House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave

Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida

District: Gautam Buddha Nagar

UP: 201315 M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

Bisari Jaayab jaroori Chhai(**बिसरि जाएब जरुरी छै)**; A collection of Maithili poems by Shri. Rabindra Narayan Mishra. एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि । कॉंपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि ।

# समर्पण

समस्त मैथिली भाषीकेँ सप्रेम समर्पित

बिसरि जाएब जरुरी छै(कविता संग्रह) साहित्यिक कृति थिक। एहिमे उद्धृत कैकटा प्रसंग,कथानक जनश्रुतिपर आधारित अछि, जकर ऐतिहासिकता प्रमाणित नहि कएल जा सकैत अछि। एहिमे लेल गेल कैकटा नाम,ठाम आ कथानक काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

# अनुक्रम

१ बिसरि जाएब जरूरी छै /९
२ संवाद/ १२
३ अन्वेषण/ १४
४ मनुक्ख आ  भगवान /१६
५ आत्मसम्मान/ २०
६ स्त्रीक अधिकार/ २२
७ उम्मीद अखन बाँकी छै/ २६
८ केहन बेकाल छै /२९
९ मुक्ति /३१
१० स्वभाव /३४
११ भारत महान रहए ! ३६
१२ नव वर्ष मंगलयमय होअए!/३८
१३ गाछ-वृक्ष /४०
१४ सृजन/ ४२
१५ नीक अखनो बाँचल छै/ ४५
१६ मौसम  कमाल  छै/ ४७
१७किएक छी एतेक उदास?/४९
१८ अहंकार /५१
१९ प्रदूषणक प्रहार /५४
२० मनुष्यता अनमोल छै /५७
२१ मोन पड़ै अछि गाम /५९
२२ सृजन  आ संहार/ ६३
२३ पंछी जपए हरिनाम /६५
२४ फोन /६८
२५ कोना बचतै बेटी/ ७१
२६ मर्यादा पुरुषोत्तम राम/ ७५
२७ चलि गेलाह राजाराम/ ७८
२८ रामक जल समाधि /८२
२९ वरक बिदाइ/ ८६
३० अंगुलीमालक कथा /८८
३१ उठू आबो,उठू औजी /९२
३२ कंजूसक दुर्गति/ ९४
३३ केहन जमाना आबि गेल अछि?/९६
३४ चिट्ठी /९८
३५ हम बाजू कि नहि बाजू/ ९९
३६ अन्तर्व्यथा/ १०१
३७ बूढ़क बिआह /१०२
३८ प्रेम/ १०४
३९ विछोह/ १०५
४० अनाहूत/ १०६
४१ एकटा अभिशाप/ १०८
४२ अर्थतंत्र    /११०
४३ अर्थहीन    /१११
४४ अहींक मरजी /११२
४५ आजुक नेता /११३
४६ एकटा प्रश्न/ ११४

४७ जीवन की अछि?/ ११५
४८ पत्र छी हम /११६
४९ पैसा/ ११८
५० प्रत्याशा/ ११९
५१ बिहान/ १२१
५२ वसंतागमन १२२
५३ संकल्प /१२३
५४ ककरा कहू/ १२४
५५ प्रवासीक दर्द/ १२५
५६ कन्यादान/ १२९
७६ जीवन संघर्ष/ १३०
५८ जरूरी अछि एकटा आओर शिवक/ १३२

१

## बिसरि जाएब जरूरी छै

छोड़ि दिअ चिंता

मोनकेँ आराम  दिऔ

चाहक संग रौदमे

भोरुका अखबार पढ़ू

कोनो पुरान दोस्तकेँ

फोन लगाएल करू

बिसरल-हराएल

संगीक पता करू

अंतरग प्रसंगसभ

चैनसँ बतिआएल करू

कखनो-कखनो

छुट्टी मनाएल करू

आइ-काल्हि करैत

जिनगी बीता देलहुँ

जे केलहुँ,नहि केलहुँ

तकर कोन हिसाब छै

छोड़ू ओ बातसभ

मोनकेँ उसास दिऔ

नहूँ-नहूँ गीत

गुनगुनाएल करू

कखनो काल

आरामो कएल करू

एक पर एक

दुनिआमे पसरल छै

ककरा की छै

तकर की माने छै

जे किछु प्राप्त अछि

बहुत मूल्यवान छै

कथुक ने अंत छै

जीवनमे छोट-पैघ

सभक स्थान छै

सुखी रहबाक लेल

संतुष्टि जरूरी छै

जीवनमे शांति लेल

संतोष जरूरी छै

छोट-मोट बात

## बिसरि जाएब जरूरी छै

व्यर्थक शंकासँ
अनावश्यक चिंतासँ
सदिखन बचैत रहू
मोनकेँ हल्लुक करू
जाहिसँ निचेन रहए
आनन्द  बनल रहए
से काज अबस्स करू
जीवन बड़ छोट छै
हँसि कए बितबैत रहू
मरबाक तँ छैहे
मरिओ कए नाम रहए
तेहनो किछु
जीबिते करैत  रहू

**१६।०८।२०२४**

## २

## संवाद

हम सही छी,
अहाँ गलत छी—
बस एतबे बातपर
हमसभ भिड़ल छी।

ईहो तँ संभव छै,
हम सही होइ,
आ अहूँ सही छी,
मुदा, एक-दोसरकेँ
बुझि नहि रहल छी।

किएक तँ आपसमे
संवाद नहि अछि,
केओ सुनबाक हेतु
तैयार नहि अछि

अपने बात टा
बकने जा रहल अछि

संवादहीनतासँ
घर-घर अविश्वास
पसरल जा रहल अछि

भैयारीमे शत्रुता
बढ़ल जा रहल अछि

आपसमे गप्प-सप्प
अतिशय जरूरी अछि,
एक-दोसरक हालति
बुझनाइ जरूरी अछि।

सोचिऔ—ओकरो
किछु मजबूरी अछि

ई सभ जनै छै—

जे संसारमे किछु
असालतन नहि छै

खाली हाथ अबैत अछि
खालीए चलि जाइत अछि
नीक-बेजाए काज टा
बाँचल रहि जाइत अछि
चाहै छी जीवनमे
यदि सुख-शांति तँ
संवाद आपसमे
बेहद जरूरी अछि।

२२।३।२०२४

## ३

## अन्वेषण

हे भगवान
हमरा ओतए लए चलू
जतए केओ भूखल नहि होअए
नहि होइक केओ अर्धनग्न
जतए केओ रातिमे सड़कपर अहुरिआ नहि काटए
जतए कोनो बालककेँ श्रम करबाक मजबूरी नहि होइक
जतए कोनो महिलाकेँ प्रताड़ित नहि कएल जाइक
जतए धर्म, भाषा, जाति आओर पंथक नाम पर
भेदभाव नहि होइक
जतए ककरो भय
आपसी शत्रुता, द्वेष,प्रतिशोध,नहि होइक

हे भगवान!
हमरा ओतए लए चलू
जतए सभ मुड़ी उठा सकए
जीबि सकए सम्मानपूर्ण जीवन
भेटि सकैक सभकेँ अपन वाजिब हक
जतए न्याय सर्वोपरि होइक
आओर स्वतः सुलभ होइक
जतए सभ रहथि मित्रवत
जतए गरीब आ धनीक होथि सहभागी दुख-सुखमे

दूर, बहुत दूर
ताहिसँ पहिने
कमसँ कम एक बेर
हमरा ओतए लए चलू
जतए दुनिआ बुझाइक एकहि सुखी परिवार
जतए सभ केओ होथि पूर्ण संतुष्ट
जाहिसँ हम एहन दुर्लभ क्षणक आनंद उठा सकी
खुसीसँ नाची, गाबी
आओर कहि सकी
हे प्रभो!
अहाँ सचमुच महान छी!

19.2.2022

## ४

### मनुक्ख आ भगवान

एक दिन पलखतिमे ईश्वर सोचलाह
जे चली पृथ्वीपर
देखि हमर संतानसभ केना छथि?
भ्रमण करैत=करैत
सभसँ पहिने ओ
मनुक्खक प्रदेश पहुँचलाह
तँ देखैत छथि
जे विभिन्न पूजास्थलीपर जमा भेल लोकसभ
आपसमे लड़ि रहल छल
हुनके नामपर
कहि रहल छल
हमर भगवान पैघ
तँ तोहर भगवान छोट
केओ ककरो सुनबाक लेल तैयार नहि छल
अपितु,मारकाट करबाक लेल उद्यत छल
एहि दयनीय परिस्थितिकेँ देखि
ईश्वर बहुत दुखी भेलाह

ओतए थोड़े काल रूकि गेलाह

हुनकासभकेँ मनेबाक प्रयास केलनि

जाहिसँ ओ सभ बूझि सकथि

जे ओ कहिओ नहि सोचने रहथि

जे घटनाक्रम एहन होएत

जे लोक हुनका कोनो खास भवन अथवा पोथी धरि

सीमित करबाक प्रयासमे हिंसक भए जाएत

ओ तँ स्वेच्छासँ बहुरंगी दुनिआक सृजन केलनि

हुनकर सभक स्वभाव,स्वरुप आ विचार

फराक-फराक देलनि

जाहिसँ लोक विभिन्नतामे

आनन्द मना सकथि

आ मतभेद अछैतो

आपसमे तालमेल बनओने रहथि

मुदा से कहाँ भए सकल?

आब जे ओ देखि रहल छथि

से सर्वथा हुनकर इच्छाक प्रतिकूल छल

ओ कहिओ सोचिओ नहि सकलथि

जे हुनकर संतान एना आपसमे

छोट-छोट बात लेल लड़ि कए

जीवनकेँ दुष्कर बना लेताह

नहि बूझि सकताह अटल सत्य
जे सभ तँ हुनके संतान छथि
ई सभ देखि ईश्वर बहुत उदास भए गेलथि
ओ दुखी मोनसँ जंगल आ पहाड़ दिस बढ़ि गेलाह
जाहिसँ ओ अपन आन-आन सृजन
जेना जानवर,चिड़ै आ वृक्षकेँ देखि सकथि
ओमहर गेलापर ईश्वर देखै छथि
जे ओ सभ बहुत मस्त छल
अपन-अपन रुचि आ स्वभावक अनुसार
उनमुक्त जीवन जीबि रहल छल
यद्यपि ओ सभ कहिओ
कोनो धार्मिक स्थानपर नहि गेल
कोनो धार्मिक पोथी नहि पढ़लक
तथापि,पूर्वाग्रह,बदला अथवा
अनावश्यक हिंसासँ मुक्त छल
अपन आयु समाप्त भेलापर
बिना कोनो पश्चातापकेँ
एहि दुनिआकेँ छोड़ि दै छल
ओकरासभकेँ आनन्दमग्न देखि
ईश्वर बहुत प्रसन्न भेलाह
ओमहर किछु दिन बेसीए रहि गेलाह

मुदा

पृथ्वीक ओहि भाग दिस

जेमहर मनुक्खक बास छल

कहिओ नहि घुरलाह

बहुत दुखी मोनसँ अपन गाम लौटि गेलाह

ईश्वरक संदेश साफ छल

तथापि,हमरासभ अज्ञानतावश

आपसमे लड़ैत रहि गेलहुँ

अहंकारमे रमल रहि गेलहुँ

हुनकर भावनाकेँ नहि बूझि

सत्यसँ बहुत दूर रहि गेलहुँ।

२३।८।२०२२

आत्मसम्मान

हम बहुत छोट भए जाइत छी
जखन ककरोसँ कथुक उमीद करैत छी
नाम, प्रसिद्धि वा मान्यताक
पाछू  दौड़ैत छी
जखन हम अपना विषयमे
दोसरक विचारकेँ बहुत महत्व दैत छिऐक
अपना बारेमे दोसरक विचारपर
विश्वास करैत चलि जाइत छी
जखन हम अनेरे अनकासँ
अपन तुलना करए लगैत छी

कोनो बात लेल ककरो मुहतक्की किएक
ककरोपर कथु लेल निर्भरता कथीक
अहीं छी स्वयं शक्तिश्रोत
सभ कथुक,नीक आ अधलाह
बनओने रहू आत्मसम्मान
भरोसा राखू अपन शक्तिमे

तखनहि अहाँ जीबि सकब उत्कृष्ट जीवन
आ बना सकब जीवनकेँ अर्थपूर्ण
हमरा सभकेँ ई बात बुझबाक चाही
जे हमसभ छी ईश्वरक संतान
ओ हमरा सभकेँ की नहि देलनि?
सभटा तँ देबे केलनि
तेजस्विता,वुद्धि आ चिंतन करबाक शक्ति
तखनहु किएक छी परेसान?

जीवन बहुत छोट अछि
छोट-छोट बातमे ओझरा कए
एकरा नष्ट नहि करू
आउ, अपना लेल जीनाइ सीखू
प्रकृतिक सौन्दर्यक आनंद उठाउ
सुनु मधुर संगीत
चारू कात पसरल प्रकृतिक विहंगम द्दष्य देखू
जीवनकेँ आनन्दमय करू।

7.6.2022

## ६

## स्त्रीक अधिकार

बहुत सताओल गेल छै
जुग-जुगसँ
समाजक सभटा प्रतिबंध
सहैत रहि गेल छै
आर तँ छोड़ू
पहिने तँ हाल ई छल
जीबिते  मृत पतिक संग
जराओल जाइत छल
एहनो कहीं भेल अछि
जे जीबिते व्यक्ति
धधरामे पड़ि कए
चिकरतै नहि
प्रतिरोध करतै नहि
से ओ करै
जरूर करै
चिकरै,भोकरै
मुदा ओकर स्वरकेँ

दाबि देबाक लेल

प्रचंड शंखनाद करै

महिलाकेँ मृत पतिक संग

तेना ने गतानि देल जाइ

जे ओ नहि भागि सकए

प्राणक रक्षाक लेल

प्रयत्नशील चुट्टिओ रहैत छै

मुदा ओ ताहूसँ वंचित

कए देल जाइत छलि

जरि कए जखन खाक

भए जाइत छलि

तखन ओकरा नामपर

सतीमाता कहाइत  छल

सती मंदिरमे लोकक

ढबाहि लागि जाइत छल

समय-साल बदललै

सती प्रथा बंद भेलै

की अत्याचार खतम भेलै?

नहि,नहि

नव-नव रूपमे

बढ़िते गेलै,पसरिते गेलै

कानूनसँ भेटल अधिकारो

दुर्लभ भेल छै

माए-बाप,भाइ

छिनि लैत छै

एहनो कही भेलै अछि?

आन नहि,बापे कहै छै

जे बिआहल बेटी नैहरमे

किएक घुरिआइ छै?

बेटीक अधिकारपर

अखनो बहुत बात  छै

जकरे देखू सएह

करैत वज्रपात छै

समाज मूक दर्शक

बनल लाचार छै

अहीं कहू बराबरीक

कहाँ विचार छै?

की गाम की सहर

मचल अत्याचार छै

समाचार पढ़ि मोनमे

होइत हाहाकार छै

दुर्घटना तेहन-तेहन

होइत वारंबार छै

समानताक बातसभ

झूठक प्रचार छै

मनुष्यता बिलाएल छै

केहन समय -साल छै

असुरक्षित घरोमे

बेटीक जानमाल छै

यद्यपि समाजमे

भए रहल सुधार छै

बेटीओ लेल इस्कुलक

खुलि गेल द्वारि छै

अखनहु बेटीक लेल

समस्याक पहाड़ छै

बेटा-बेटीमे भेद मिटै

तकर दरकार छै।

२९।८।२०२३

## ७

## उम्मीद अखन बाँकी छै

केहनो अन्हार  होइ

इजोत भेनहि छै

समय खराप होइ

परिवर्तन भेनहि छै

भने कनी दिक्कति होइ

मुदा सही होइते छै

जुग चाहे जेहन होइ

नीक-बेजाए होइते छै

कतबो प्रतापी होइ

कष्ट ओकरा भेने छै

अयोध्याक महारानी

सीताक ई हाल होनि?

जीवन भरि रने-बने

समय हुनकर बीति जानि

पृथ्वीक कोरामे

अन्ततःशरण लेथि

कृष्णक कथे कोन
महाभारतक मार्गदर्शक
मारल जाथि मामुली
व्याधाक तीरसँ
सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र
उदाहरण अखनो छथि
अपन सिद्धान्तपर
अड़ल रहि गेल छथि
कनैत रहथि पत्नी
पुत्रक लासपर
हरिश्चन्द्र पालन केलथि
तैओ कर्तव्य अपन
एतबा तँ निश्चित जे
राम,कृष्ण,हरिश्चन्द्र
रहथि सभ धैर्यवान
निष्ठावान,चरित्रवान
स्मरणीय अखनो अछि
हुनकासभक कीर्ति
जे केओ अड़ल अछि
अपन सिद्धान्तपर
जकरामे साहस छै

सहीकेँ सही

गलतकेँ गलत

कहि सकै छै

बिना भय परिबाहकेँ

ओएह बनि गेल मिसाल छै

सही मानेमे

ओहने लोकसँ

पृथ्वी नेहाल छै

१९।१२।२०२४

## ८

### केहन बेकाल छै

जेना-जेना लोक
धनीक भेल जाइ छै
आपसी प्रेम-भाव
गरीब भेल जाइ छै

मनुष्यता बिलाएल छै
ने बाँचल इमान छै
लुच्चा-लफंगाक
छाती उतान छै

काज की करैए
ने तकर ठेकान छै
जकरा लग टाका छै
कहबै महान छै
जकरा देखू हाथमे
लेने मोबाइल छै
मुदा अपन लोकसँ
बंद बोल-चाल छै

सौंसे गाम कोठा  छै

मनुक्खे निपत्ता  छै

बाट तकैत बूढ़सभक

आँखि भेल खत्ता छै

बेटा बिकाइत  छै

जेना माल-जाल छै

अहीं कहू समय-साल

केहन बेकाल छै?

१९।३।२०२४

१

## मुक्ति

मुक्त करू अपनाकेँ
मोहक बंधनसँ
अनन्त इच्छाक मकरजालसँ
जे पसिरल अछि चारूकात
ई चाही ओ चाही
ई नहि चाही
सदिखन व्याकुल छी
अभिशप्त जीवन
जीबाक लेल विवश छी
किएक ओझराएल छी मोहफाँसमे?
अभिलाषासँ दूर चलू
आनन्द मना लिअ
उड़ि जाउ उनमुक्त आकाशमे
चिड़ै जकाँ
अनुभव करिऔ
कतेक आनन्द छै
निश्चिन्त,उनमुक्त जीबामे

जे किछु अछि

तकरा बाँटि देबामे

सोचियौ तँ,

एतहि रहि जेतै सभ किछु

संग किछु नहि जेतै

ठहरू तँ

मुड़ि कए देखू तँ

किछु शाश्वत नहि अछि

समयक संगे

विलीन भए  जाइ छै सभ किछु

जागि सकी,तँ जागू

स्वयंकेँ मुक्त करू

ईश्वर की नहि देलनि?

अपनाकेँ चिन्हू

संभव होअए तँ परोपकार करू

के जनै छै

फेर एहि धरतीपर

आबि सकब कि नहि

सुख आ शांति जौँ चाही जीवनमे

जे जेहन अछि स्वीकार करू

जाहिसँ आलोकित अछि

ब्रह्मांड अखिल

ओहि महाप्रभुक ध्यान धरू।

१७।०१।२०२६

## १०

## स्वभाव

ओएह हबा ओएह पानि

ओएह पृथ्वी,आकाश

सभ जीव,जन्तु लेल छै

मुदा,साँप ओहीमे

जहर बना लैत छै

जकर डसिते लोक

ठामहि रहि जाइत छै

चमेली,चंपा,बेली

अढ़ूलक फूल

एही माटि-पानिमे

एही हबा बसातमे

मह-मह करैत अछि

लोककेँ सदिखन

सुखे दैत छै

मौसम खराप होइ

वर्षा होउ,अन्हड़ उठौ

भने रौदी पड़ौ

गुलाब अपन सुगंध
छोड़ि नहि पाबै छै
काँटक बीच रहितहुँ
गमकैत रहैत छै
दोष हबा,रौदक नहि छै
स्वभाव जकर जेहन छै
तेहने काज  ओ
करैत रहि जाइत अछि
समय बीति जाइ छै
जकर जेहन स्वभाव
चर्च तकर बादो मे
होइते रहि जाइ छै।
१२।१।२५

## ११

### भारत महान रहए !

वर्षा होइ समयसँ
सौंसे हरिआयल रहए
एहि देशक धरती
सदति उर्वरा रहए
खेत खरिहानसभ
अन्नसँ भरल रहए
गाछ-बृक्ष खूब फरए
बेली-चमेलीक फूल
मह-मह करैत रहए
सभ तरहेँ संपन्न
देश अपन  बनल रहए
लोक होथि ऊर्जावान
विद्वान आ चरित्रवान
राष्ट्रक प्रति निष्ठावान
दुनिआमे  नाम करथि
वीर होथि संतान
मजगूत होअए सेना
विश्वमे अजेय  रहए

भारत माताक मान

सभठाम बनल रहए

पराक्रम आ शौर्यमे

देश  अग्रसर रहए

शक्ति आ शास्त्रक

शंखनाद होइत  रहए

अखंड भारतक स्वप्न

जल्दी साकार होअए

एक बात मोनमे

सदिखन बनल रहए

हम रही, नहि रही

मुदा,ई देश अपन

सभ दिन चहकैत रहए

विश्वगुरु भारत

सभ दिन कहबैत रहए!

२२।१२।२०२४

## १२

### नव वर्ष मंगलयमय होअए!

सभ सुखी रहए संतुष्ट रहए
अनतर्मन सदिखन शांत रहए
आपसी प्रेम सद्भाव बढ़ए
सभ जन-धनसँ परिपूर्ण होअए

अप्पन भाषाक सम्मान होअए
मैथिल छी से अरमान रहए
सभगुण संपन्न हमर पूर्वज
एहि बातक सदिखन ध्यान रहए

मिथिलामे छथि वा बाहर छथि
मैथिली सहज अनुरागी छथि
चाहे जे धर्म वा जातिक छथि
सम्मानक सभ अधिकारी छथि

नववर्षमे ई संकल्प करु
जे जतहि छी एतबा ध्यान धरु

जतबे जकरासँ संभव अछि

अपन लोकक कल्याण करु

१.१.२०२४

१३

**गाछ-वृक्ष**

अपन दुख-सुख

ककरो नहि कहैत अछि

कोनो अपेक्षा हमरालोकनिसँ

नहि रखैत अछि

बस सदिखन किछु ने किछु

दैते रहि जाइत अछि

आर तँ छोडू

जखन ओकरा  खंड-खंड

कए देल जाइत अछि

तखनहु ओ अपना भरि

उपकारे केने जाइत अछि

हमर अहाँक घरक

चौकठि,केबार,खिड़की बनि

आजीवनसभकेँ

सुखे दैत रहि जाइत अछि

जाबे जीबैत अछि

नित्य लाल-पिअर-अरियर

फुल फुलाइत अछि

समय-समयपर

तरह-तरहकेँ स्वादिष्ट

फलसँ लदि जाइत अछि

ततबे नहि,

निरंतर जीवन वायुक

सृजन सेहो करैत अछि

रौदसँ बचबाक लेल

छाहरि तँ दैते अछि

असंख्य चिड़ै-चुनमुन लेल

आश्रय बनि जाइत अछि

एहन महान अछि

ई गाछ-वृक्षसभ

तैओ सदिखन

मौन सधने चलि जाइत अछि

अहीं कहू

एहिसँ पैघ संत

की सोचलो जा सकैत अछि?

जे बिना अपेक्षाकेँ

सभहक कल्याणमे

लागल रहि जाइत अछि (३०।११।२०२२)

१४

## सृजन

केहन छल ओ दिन

जहिआ पहिल बेर केओ

आएल एहि धरतीपर

केहन लागल हेतै ओकरा

पृथ्वी, आकाश,हबा,पानि

केहन देखाएल हेतै ई दुनिआ

सूर्यक रश्मिक तपिस

शीतल वायुक प्रकोप

चारूकात पसरल जंगल-झार

गर्जन-तर्जन करैत

भयाओन हिंसक जानबर

जखन ओकरा देखाएल हेतै

ओ कोना बाँचल  होएत?

केना तकने होएत

अपन जीवन संगिनी

केना केने हेतै ओकर स्वागत?

की पता ओ संगे टपकल अनन्त शून्यसँ

कतहु रहबाक केने होएत जोगार

केना रक्षा केलक

आक्रमक जीव-जन्तुसँ

कहल नहि जा सकैत अछि

जे दुनू बेकती केना

ओझराएल परिणय सूत्रमे

रचि लेलक अपन संसार

कतेक संतुष्ट रहल होएत ओ

एहि संसारसँ बिदा होइत

जखन देखने होएत

हरल-भरल पृथ्वी

सुंदर-सुंदर घरमे रहैत

संपन्न संतानसभ जे

गढ़ि लेलक सुंदर संसार

बना लेलक सभकिछु

सृष्टिक स्वागतमे

गाबि रहल मंगल गान

असलमे ओ जे छल

मुदा,छल महामानव

नैसिर्गकतासँ परिपूर्ण

सकारात्मक सोच

प्रेममय हृदय

निर्विकार मौन

इएहसभ हेतैक

ओकर शक्तिस्रोत

सभ बाधाकेँ टपैत

ओ रचि लेलक सभकिछु

जे हम देखि रहल छी।

१६।१।२०२४

**१५**

## नीक अखनो बाँचल छै

एहि बेकालमे ककरो केओ नहि

लोक स्वार्थमे आन्हर अछि

कोनो तरहेँ तुरंत

करोड़पति हेबाक लेल

व्याकुल  अछि

नहि बुझि रहल अछि

जे टाका कतबो होइ थिकै झिटुके

की हेतै बेसी भेलासँ

जरुरति भरि चाही

अहाँक वंशज की करताह?

कतेक संपन्न रहि सकताह

तकर फसादमे पड़ि

जीवनकेँ अशांत नहि करू

समय-साल जे छै से छै

नीक अखनो बाँचल छै

ईश्वरक असीम शक्ति

भावी पीढ़ीक पुरुषार्थपर विश्वास करू

जे जीतै से रस्ता बना लेतै

मोन हल्लुक करू

निश्चिन्त जीवनयात्रामे आगू बढ़ू
जे प्राप्त अछि तकर सम्मान करू
संतुष्टि भाव मनमे धरू
कृतज्ञ होउ ओहि परमशक्तिकेँ
जे रचलनि ई अनुपम संसार
जे हमरा अवसर देलनि
एहि सृष्टिक संग हेबाक
सभ मिलि कए  करी प्रार्थना
शृष्टिकर्ताकेँ वारंबार-
क्षमाकरू हे महाप्रभु!
हम छी अज्ञानी
नहि बूझि सकै छी
अहाँकेँ कनीको
मुदा तैँ की?
छी तँ अहींक संतान
हे ईश्वर! दिअ शक्ति
हुनकर सम्मान कए सकी
सत्यनिष्ठा आ सत्कर्मसँ
जे बचौने छथि एहि संसारकेँ
हमरासभक रहए जोगर।
१३।४।२०२४

## १६

## मौसम कमाल छै

कतेक नीक होइ छै
जखन वर्षा होइ छै
मेघ ढनढनाइत छै
गरजैत फरजैत छै
जतए मोन होइ छै
ओतए उड़ि जाइ छै
झमाझम बरसै छै
बिजलौका चमकै छै
खेतसभ दहाएल छै
भेल थाले-थाल छै
प्रकृति शक्तिमान छै
तकर ई प्रमाण छै
राति भरि झमकैत रहल
मेघ बरसैत रहल
रस्तासभ बंद छै
लागि गेल जाम छै

इसकुलमे छुट्टी छै

बरसात घोषित छै

चुरा-दही-लाइ छै

सभ तरुआ खाइ छै

गाछसभ नेहाल छै

हरियर डारि-पात छै

सुखद बसात छै

माहौल गरमाएल छै

एतबे सभ कहै छै

मौसम कमाल छै

१७।९।२०२४

## १७

### किएक छी उदास ?

हे  कवि!

किएक छी उदास?

भरल-पुरल अछि गृहस्थी

बनओने छी तीनमहला मकान

इलाकामे जानल-मानल छी

साहित्यक कोनो विधा

अपनेसँ बाँचल नहि अछि

अखनहुँ फेसबुकपर

अहाँक कविता पढ़ि

झुमि जाइत छथि पाठक

तखनो अहाँ छी उदास!

किएक कहि रहल छी?

“हम परिणाम निराशा”

ई जीवन छैक श्रीमान् !

एतए एहिना होइत छैक

से अहाँसँ बेसी के बूझैत अछि?

जीवनकेँ बुझबाक,गुणबाक हेतु

अहाँ कहिआसँ छी लागल

तथापि अहाँ किएक छी  उदास?

अहाँ छी स्वयं विद्वान

की कहि सकैत छी?

मुदा एतबा विनती तँ

कइए सकैत छी

नहि बुझू अपनाकेँ असगर

अहाँ संगे अछि

 समस्त मैथिल परिवार

बहुत उमीदक संग ।

छी अहाँ प्रणम्य

हे कवि!

नहि रहू उदास

11.1.2022

## अहंकार

मनुक्ख अपन दुश्मन
अपने अछि
अहंकारवश अज्ञानताकेँ
अपनओने अछि
जखन दिन-राति
लोभ,काम,क्रोधमे फँसल रहब
अनेरे मोहजालमे ओझराओल रहब
कोना लए सकब दिव्य आनन्द
जकर अहाँ अधिकारी छी
अपनेसँ फँसि गेल छी
स्वार्थक जालवृत्तिमे
अपना छोड़ि आर किछु
देखाइते नहि अछि
कटि गेल छी समग्रसँ
तखन केना रहब शांत
ओ तँ होएत तखने
जखन करब त्याग अहंकेँ
आ विलीन भए जाएब
ओहि अनन्त असीममे

जकर आदि-अन्त नहि अछि

जे रचलक क्रोटि-क्रोटि ब्रह्माण्ड

हजारों तारामण्डल

समस्त कालखण्डसँ मुक्त

निरन्तर कालक गालमे

समाहित भए रहल सभकिछु

एकटा बिंदुओ मात्र

अछि कि नहि पृथ्वी

जकर नान्हिटा टुकड़ीक लेल

हमसभ केने छी अड़ारि

अपन स्वजनसँ

केने छी अस्तव्यस्त

अपनो आर सभकेँ

कहाँ टकराइत अछि

कोनो ग्रह आपसमे?

असालतन घुमैत अछि नक्षत्रमे

संतुलन बनओने अछि

किएक आ केना?

ओ सभ मुक्त अछि

अहंकार भावसँ

नहि छै परिवाह

अपन आस्तित्वके

तेँ अनन्त ब्रह्माण्डक

सहभागी बनल रहि जाइत अछि

हमहूँ अहाँ छी ओएह स्वरूप

अनन्त ब्रह्माण्डक

बसर्ते छोड़ि सकी

छुद्र स्वार्थकेँ

आ मुक्त भए सकी अहंकारसँ।

३।३।२०२४

## १९

## प्रदूषणक प्रहार

हजार साल बाद
जौँ  घुरि आएब एहि पृथ्वीपर
तकैत अपन लोकसभकेँ
तखन के भेटत?
साइत ई दुनिआ
बनि गेल रहत मरुभूमि
नहि रहत कतहु
पानिक एक्को बूंद
धह-धह जरैत धरती
अचानक फुटि गेल
शक्तिशाली आणविक बमसँ
निकलैत अजस्त्र उष्मासँ
छाउर बनि गेल  सभकिछु
समुद्र पर्यन्त सुखाएल  रहत
दरारि फाटि गेल रहत सौंसे
खण्ड-खण्ड भेल धरती
नहि देखाइत रहत सूर्य
सौंसे धुआँ-धुआँ भेल रहत
मनुक्खक तँ बाते कोन

नहि बाँचत कोनो जीव-जन्तु
के करत करुण क्रन्दन
हाकरोस करैत प्रकृति
भष्म भए गेल रहत सभकिछु
पता नहि पृथ्वीक आस्तित्व
रहिओ सकत कि नहि
हमर अहाँक निर्मित
सुंदर-सुंदर महल सभक
नहि रहत नामोनिसान
कतए तकबनि अपन वंशजकेँ?
ओ सभ तँ कहिआ ने
भए गेल रहताह काल कलवित
नहि भोगि सकताह कोनो सुख
नहि देखि सकताह
पृथ्वीपर सहज सुलभ
हरीतिमाक अनुपम सौंदर्य
सोचिऔ, ओ सभ की कहताह
केहन छलाह हमर पूर्वज
जे मिथ्या अहंकारवश
नहि बचा सकलाह किछुओ
नाकारात्मक सोचसँ आवद्ध

नष्ट कए देलनि सभ किछु

आबो सम्हरि जाउ

छोड़ू दुराग्रह

बचा लिअ पृथ्वीकेँ

प्रदूषणक प्रहारसँ

बहा दिअ समुद्रमे

सभटा आणविक हथियार

जे बनि गेल अछि

शत्रु  मानव समाजकेँ

आब बुझलिऐ

केहन बुद्धिमान छलाह पूर्वज

पोषण करैत रहलाह प्रकृतिक

सर्वत्र रहए शांति  ओ सुख

आबो जागथु, सम्हरि जाथु

करथु त्याग राक्षसी प्रवृतिकेँ

जीबथु संयमित जतबे-ततबेसँ

प्रकृतिक संरक्षण करैत

सोपि जाथु  वसुंधरा

एहिना हरियर कंचन

अगिला पीढ़ीकेँ।

१९।२।२०२४

## २०

## मनुष्यता अनमोल छै

अहाँ अमर भए सकै छी
यदि दुखी व्यक्तिकेँ
सहानुभूतिमे किछु कहै छी
संघर्ष करैत-करैत
जे थाकि चुकल अछि
जे निराश अछि
जकरा रस्ता बंद लगै छै
तकरा उत्साहित कए
नया जीवन दए सकै छी
अहाँ रहब,नहि रहब
फरक की पड़ै छै
दुनिआमे कतेको लोक
अबै छै,जाइ छै
मुदा अहाँ मोन पड़बै
अबस्से ओकरा
जकर दुखक समयमे
अहाँ संगे ठाढ़ हेबै
एक सँ एक लोक भरल छै

सामर्थ्यक अंत नहि छै
मुदा जे बिमार छै
दबाइओक अभाव  छै
तकरा लेल अहीं
भगवान बनि जेबै
यदि बेर पर किछु
मदति कए देबै
अपन पेट तँ सभ भरैए
यदि पेट काटि कए
भुखलकेँ  खुआ देबै
अहाँ ओकरा दृष्टिमे
बड़ पैघ बनि जेबै
मनुष्यता अनमोल छै
भगवान बना दै छै
जे शक्ति देने छथि
परोपकारमे लगा देबै
निश्चय अमर भए जेबै
अहाँ रही नहि रही
मुदा अहाँ लोककेँ
मोन पड़िते रहबै।
८।९।२०२४

## २१

### मोन पड़ै अछि गाम

मोन पड़ै अछि  गाम
जतए जन्म लेलहुँ
जतए पेटकुनिआ देलहुँ
काठक तिपहिया  चलेलेहुँ
बच्चासभक संगे
कबड्डी,चिक्का खेलेलहुँ
पहिल बेर भट्ठा धेलहुँ
गामेक ब्रह्मस्थानमे
फेर मिडिल इसकुलमे
सातमा धरि पढ़लहुँ
अपने गामक बच्चू बाबू
छलाह पहिल शिक्षक
नागदहक केदार बाबू रहथि
हेडमास्टर मिडिल इसकुलमे
आर कैकटा शिक्षकसभ
अबैत छलाह ओहिठाम
नरही,बिचखानासँ

अद्भुत छल ओ इसकुल

जाहि गाममे हमर पूर्वज

जे भलमानुष कहबैत छलाह

बसाओल गेल छलाह

सात पुस्त पहिने

जतए हमर वालसखासभ

संगे पढ़ैत छलाह

जतए हमर माता-पिताक

अनुपम सिनेह सतति

बरसैत रहैत छल

मुदा माथा ठनकि जाइत अछि

आब जँ जेबो करब

तँ  भेटता के?

कहाँ छथि बाँचल केओ

जे एकाधटा छथिहो

से सहर धेने छथि

जे गाममे छथिहो

से घरमे मुनल  छथि

घेरल अछि दनानसभ

बड़का देबालसँ

घरसभ बंद अछि

लटकैत अछि ताला
दनानसभ खाली अछि
भगवती पूजाक
उठौना लागल अछि
बूढ़सभ गेला बेरा-बेरी
गाम झकरि गेल
आब कतए जाएब
छी अनचिन्हार अपने गाममे
युवकसभ जे छथिहो
तिनका जानि सकै छी
पितामहक नामसँ
भने परदेशमे पड़ल छी
ई अछि अपन कर्मभूमि
जे सभ किछु देलक
आ दइए रहल अछि
मुदा तेँ की?
गाम तँ गामे अछि
जन्मभूमि तँ ओएह अछि
के लए सकत ओकर स्थान
मुदा से के बूझत?
तैओ होइए जाइ ओहिठाम

देखी अपन गाम

जतए हमर माता-पिता

आ पूर्वज लोकनिक

अवशेष अछि विद्यमान।

१८।८।२०२४

## २२

## सृजन आ संहार

सृजन आ संहार
चलिते रहैत अछि
अदौकालसँ उठापटक
पृथ्वीपर होइते अछि
अन्हड़,बाढ़ि,भूकंप
अबिते रहैत अछि
मुदा तेँ की
मनुक्ख कहिओ हारि
हाथ बारि देलक अछि?
बाधा विविध अछैत
ओ खसैत पड़ैत
फेर उठि जाइत अछि
लक्ष्य प्राप्त करबाक लेल
फेर लागि जाइत अछि
संभावना अनन्त अछि
मुनक्खक सामर्थ्यक
नहि कोनो अन्त अछि

सतति आशावान रही

नीक बात सोचल करी

असफलतासँ हारी नहि

प्रयासमे लागल रही

अर्थपूर्ण जीवन होअए

सृजनशील बनल रही।

२।९।२०२४

## २३

### पंछी जपए हरिनाम

ने कोनो फिकिर
ने कोनो तनाव
जखन जे हेतै से होउ
नहि छै कथुक परबाहि
सदिखन जीबैत अछि
उनमुक्त उड़ैत अछि
आकाशमे चहचहाइत अछि
की पता?
कते छै ओकर जिनगी
कहि नहि
कतए छै अंतिम ठेकान
से सभ ओ जानथि
जे रचलनि ई संसार
ओ तँ बस उड़ैत अछि
निर्विकार भावसँ गबैत अछि
अहा! अनुपन ई संसार
चिड़ै -चुनमुन महान अछि

नहि छै कथुक दरकार

केने अछि  सभटा जोगार

एकटा हमसभ छी

जे अकारण

चिंता नोतने रहैत छी

जे भेटि गेल

से सभ तुच्छ अछि

अनकर देखाउसमे

बेचैन जीबै छी

बरबाद केने छी सुख-शांति

अहीं कहू

जे एतेक सुंदर धरती

एहन नीरव आखाश

जलक अजस्त्र श्रोत

नदी,तलाब ,जलप्रपात

के बनओलक?

ओ सभटा करै छथिन

जरूरति भरि दै छथिन

तखन किएक छी फिरसान

निश्चिन्त रहू

राखू विश्वास नियन्तापर

आर संतानक पुरषार्थपर

जकरा बले ओ

जीबि लेत संपन्न जीवन

छोड़ू चिंता फिकर

गाउ पराती दिऔ तान

बिरिछपर पंछी जपए हरिनाम।

२६।४।२०२४

## २४

## फोन

की ओ समय छल

पोस्टकार्डमे लिखल समाद

हजारों कोस फटकी पहुँचि जाइत छल

ककरो नौकरी,ककरो बिआह

एही बदौलत तय भए जाइत छल

फोन तँ छल नहि

ककरो फोनक पीपी नंबर

देल जाइत छल

जे कोनो आपत्ति -विपत्तिमे

समाचार पहुँचाओल जाइत छल

फोनक मालिक अपन भाओ

बढ़ौने चलि जाइत छल

कहिओ बजओलक नहि तँ

बड़बड़ाइते रहि जाइत छल

फोनक विकास भेल

फटकी फोन महगे छल

रातिमे दस बजेक बाद

लोक लाइन लगबैत छल

चौथाइ रेटपर

लाइन दू लाइन

बतिआ लैत छल

आब घरे घर मोबाइल छै

फोन मोफतमे सुलभ छै

मुदा तेँ की

फोनक घंटी बजैत अछि?

कदापि नहि

जहिआसँ फोन सस्ता भेल

फोन आएब बंद भेल

एकतरफा फोन करैत

लोक थाकि जाइत अछि

संबंध जेना मरल जाइत अछि

फोनक घंटी मासक मास

गुम्मे रहि जाइत अछि

तखन लोक की करओ?

फेसबुक ह्वाट्सअपपर

आंकर,पाथर बिछैत अछि

जकरा तकरासँ संबंध जोड़ि

समय  बितबैत अछि

अपने बनाओल मायाजालमे

फँसल चलि जाइत अछि

सच कहै छी

ई मोबाइल फोन

फेसबुक आ ह्वाट्सअप

जानक जंजाल अछि

एहिसँ आपसी संवाद

बंद भेल जाइत अछि

गप्प-सप्प जरूरी अछि

जे लगीचमे अछि

जे अछि,जेहन अछि

ओकरासँ मित्रता जरूरी अछि

परिवार यदि बचेबाक अछि

परिवारक बीच एकरा

हटाएब जरूरी अछि।

सिनेह बनल रहए

आपसी बैसार जरूरी अछि।

१२।३।२०२४

## २५

## कोना बचतै बेटी

कोना बचतै बेटी
आँखि गरओने छै
कामांध आतुर छै
नान्हिटा बच्चा पर्यन्त
घरोमे असुरक्षित छै
केहन छै समाज
ककरापर करब विश्वास
घोर कलियुग छै
कोना बचतै बेटी?

करबै छै अल्ट्रासाउन्ड
करै छै भ्रूणहत्या
बेटी बुझिते जन्मसँ पहिने
दै छै मृत्युदण्ड
ई केहन समाज छै?

कानून धएले रहि जाइत छै

की करतै केओ

जखन जन्मदाता स्वयं

काल बनि जाइ छै

कोना बचतै बेटी?

कते मोसकिलसँ पढ़ै छै

इसकूल,कालेज जाइ छै

डाक्टर,इंजीनियर,प्रोफेसर

सभकिछु बनि जाइ छै

अन्याय,अत्याचार पछोड़

केने रहि जाइ छै

इज्जति बचेबाक लेल

जानो गमा दै छै

कोना बचतै बेटी?

पढ़ि लिखि आब

ओहो किछु कहबै छै

कलक्टर,मजिष्टर

ओहो बनै छै

तैओ राक्षससभ

प्राणो हरि लै छै
कोना बचतै बेटी?

पैत्रिक संपत्तिमे बरोबरिक
कानूनी अधिकार  छै
अपने माता-पिता,वंधु
मुदा बंचित करै छै
निरलज्ज कहै छै-
दहेज देल गेलै
तोहर बिआहमे
बात ओतहि खतम छै
आब जे बाँचल छै
बेटाक हक छै
कोना बचतै बेटी?

मनुक्खक सृजनहार छै
कोखिमे सोनितसँ
संतान पोषै छै
जानपर खेलि कए
बच्चा जनमबै छै
जे आइ बेटी छै

सएह माए बनै छै

कोना चलतै सृष्टि

कोना बचतै समाज

अहाँ कोना बनबै बाबा

जखन नहि रहतै बेटी

मुदा,ई सभ बूझत के

अन्याय बढ़िते जा रहल छै

बुझा नहि रहल छै

एहन पतित जुगमे

कोना बचतै बेटी?

२६।८।२००४

## २६

## मर्यादा पुरुषोत्तम राम

कष्ट सहलनि सालक साल
तैओ धर्य नहि छोड़लाह
रहि गेलाह अडिग धर्मपर
पिताक वचन पालन केलनि
नहि घुरलाह राम
चित्रकुटसँ अयोध्याधाम
यद्यपि ओहिठामसँ
के के नहि आएल
माता कैकेयी पर्यन्त
करैत रहलीह पश्चाताप
भरत भए गेलाह दण्डवत
नहि चाही अयोध्याक राज
हमरा बस चाही राम
वशिष्ठ,विश्वामित्र,जनक
माता कौशल्या सहित
कहैत रहि गेलाह
मुदा नहि घुरलखिन राम

बौआइत रहलाह रने-बने

दुर्भाग्य ओतबे नहि

हरि लेलकनि रावण सीताकेँ

संगमे रहथिन मात्र लक्ष्मण

साहस आ धैर्य छलनि संबल

ठाढ़ कए लेलनि बानरी सेना

हुनमान,सुग्रीव,जामबंत,अंगद

सन  योद्धाकेँ संग केलनि

आखिर हारि गेल रावण

भए गेलै घरहंज

नहि बचलै  केओ

जे करितै पिण्डदान

लंका विजय पश्चात

विजयी सेना समवेत

राम वापिस अबै छथि

अयोध्यापर राज करै छथि

धोबीक कहलापर

जानकीक त्याग करै छथि

जानकीकेँ सहए पड़लनि

कतेक अपमान

कनैत रहि गेलथि

वालमीकिक आश्रम लग

लक्षमण वापस आबि गेलथि

अत्यन्त दुखी आ शोक संतप्त

राम करैत रहलाह अपन कर्तव्य

अंत-अंत धरि

मुदा,जानकी बिना

सभ व्यर्थ लगै छनि

नहि सुति सकलाह कहिओ

जगले रहि गेलाह राम

की की नहि सहलाह राम

ओहिना नहि भेल रामराज्य

सर्वस्व त्याग केलनि  राम

सहि नहि सकलाह

सीताक भूसमाधि

‘आब नहि चला सकब राज-पाट

व्यर्थ लागि रहल अछि सभकिछु’

लव-कुशकेँ देलनि आशीष

लेलनि जल समाधि सरयूमे

विष्णुलोकसँ आएल अबाज

स्वागत मर्यादापुरषोत्तम राम!

१४।२।२०२४

२७

## चलि गेलाह राजाराम

जे राम सभदिन छलखिन
हुनकर सभक आशा
जिनकापर छलनि अयोध्याक भार
जे सभ दिन सहलनि अपार कष्ट
मर्यादाक पालनक लेल
सीता सन भार्या पर्यन्तकेँ
छोड़ि देलनि
जाहिसँ स्थापित होअए समाजमे
नीक दृष्टान्त
से राम जा रहल छथि पैरे-पैरे
मौन,चिंतनमे लीन
गाछ-बिरिछ,पशु-पक्षी
सभ किछु अछि शांत
केओ किछु बाजि नहि रहल अछि
हम ककरा लेल फुलाएब
सुन्दर सुन्दर,लाल-लाल फूल

के खाएत मधुर फलसभ

गाय,महिष,बिलाड़ि,घोड़ा,हाथी

सभ अछि उदास

हमर प्राणप्रिय राजाराम

आब नहि रहताह

हम जीबिए कए की करब?

हमहूँसभ हुनके संगे लेब

सरयू नदीमे जल समाधि

ओ क्षण केहन अभागल छल

जखन कि राम

समस्त वंधु-इष्ट-मित्रसभक संगे

बिदा भेल हेताह

सरयु नदी दिस

केना व्याकुल भेल होएत

तत्कालीन समाज

केहन भयाओन छल ओ क्षण

एकर कल्पनो करैत

डर होइत अछि

हे वसुधा!

अहाँ किए देखैत रहि गेलहुँ

एहन दुखद दृश्य

करितहुँ भूकम्प,फटैत ज्वालामुखी
दहा जाइत सौंसे भूमण्डल
धसना धसैत चारूकात
नहि बँचैत कतहु किछु
नहि होइत केओ विवश
देखबा लेल एहन दृश्य
हाय अयोध्या!
तोहर भाग्य किएक एहन पल्टी मारलक
जे राजाराम छोड़ि गेलाह राज-पाट
समस्त मोह वंधन
प्रवेश कए गेलाह सरयूमे सद्यः
आकाश-पाताल एक भए गेल
चमकि रहल छल बिजलौका रहि-रहि
ठनका खसि रहल छल बेर-बेर
चारूकात मचल छल हाहाकार
किछु नहि बाँचल
केओ नहि रहल शेष
चलि गेलाह राजाराम
देखिते-देखिते
पसरि गेल विनाश चारू दिशामे
के सोचि सकैत छल

जे एहनो हेतै

राजाराम जे छलाह चक्रवर्ती

बजै छलनि डंका सगतरि

विलीन भए जेताह सरयू नदीक धारामे

चलि जाइत रहताह विष्णुलोक

छोड़ि समस्त माया-मोहकेँ

१४ ।०९ ।२०२४

२८

## रामक जल समाधि

राजा राम बिदा छथि

लेता जलसमाधि सरयूमे

भरत आ शत्रुघ्न अड़ल छथिन

हमहूँसभ लेब जल समाधि

अहींक संग

जखन नहि रहता राम

तखन जीअब कथी लेल?

अयोध्याक समस्त नर-नारी

पशु-पक्षी समेत

पाछू-पाछू बिदा छथि

वशिष्ठ पढ़ि रहल छथि अग्निहोत्र

राम आगू बढ़ि रहल छथि

पाछू-पाछू छनि

लोकक हुजुम

छथि मौन

सोचि रहल छथि

की की ने देखलहुँ

जे कहिओ ने सोचलहुँ

से कष्ट भोगलहुँ

जीवन एहन बनि जाएत

जे जानकी सन अर्धाङ्गिनी

सेहो छुटि जाएत

राम सोचिते जा रहल छथि

जानकी चलि गेलीह रसातल

हमरा सामनेमे

किछु नहि कए सकलहुँ

ओहि समयमे

पृथ्वीएटा नहि फाटल

हमर छाती सेहो विदीर्ण भए गेल

लोक हाहाकार कए उठल

व्यर्थ थिक सभकिछु

अछि आब मोसकिल

हुनका बिना

रहब एक्को क्षण

सहैत रहि गेलाह सभ किछु

चोटपर-चोट

पड़िते गेलनि

लक्ष्मण सन प्रिय भाइ
नहि रहलनि
स्वेच्छासँ केलथि प्राणत्याग
जखन राम नहि रहताह संग
जीवन अछि अर्थहीन
से बाजि
चलि जाइत रहलाह
राम नहि सहि सकलाह
ई आखरी चोट
असह्य भए गेलनि
जीवन अछिए क्षणभंगुर
जे आएल अछि से जाएत
कहि गेलनि काल
जे समय पूर्ण भेल
एहि पृथ्वीपर
से तँ ठीक छै
मुदा अयोध्यामे
एहन विनाश होएत
से के जनै छल
सौंसे अयोध्या भए गेल बिरान
केओ नहि बाँचल

गाछो-विरीछ नहि

मुदा भावी प्रबल

समयक चक्र पूर्ण भेल

जीवन भरि किछु ने किछु

घटना-दुर्घटना होइते रहल

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

सोचिते जा रहल छथि

जल्दीसँ शरण दिअ

हे कालपुरुष

तत्काल डुबकी देलनि

सरयूमे

छोड़ि गेला पाछू

दुखद गाथा

जे लोक गबैत रहत

जुग-जुग धरि

१।८।२०२४

## २९

## वरक बिदाइ

मैट्रिक पास केलनि कि हुनकर यश पसरलनि सौंसे गाम,
बाप मोंछपर हाथ फेरि कए दौरल गेला बाबाधाम।
दहिना हाथमे घड़ी कानमे सेंटक फाहा देने,
कहल बटुक वर हाक पाड़ि कए हाथमे पेपर लेने।।
अंग्रेजीसँ पास केने छी,स्टैंडर अछि भारी,
करब बिआह ओतहि जकरा छै सभसँ पैघ बखारी।
बहुत कठिनसँ कथा पटल पुनि सजल धजल बरिआती,
सौंसे गाम करए चकमक हो जेना दिआबाती ।।
भेल बिआह गेल बरिआती,एमहर वरक हाल-बेहाल,
फाँड़ बान्हि कए कुदए लागल,फटफटिया चाही तत्काल।
चारि-पाँचटा केस शेष छल,चानि बनल चनरौटा सन,
चिंतासँ नहि माथ उठै छल,बेटी बापक छल गंजन।।

बहुत भभटपन जखन पसारल,वरक क्रोध पसरिते गेल,

आस-पासके गौँआ घरुआ,के सेहो तामस चढ़ि गेल।

चारि-पाँचटा नौजवानसभ देबए लागल ललकारा,

देल तुरत गरदनिआ आनलक गामक जतए अखाड़ा।।

आसमानसँ खसल वरक भक जेना तुरत टूटि गेल,

कल जोड़ि कए बाजए लागल,जे गलती हमरासँ भेल।

छोड़ू जान हमर बस एतबहि करू अनुग्रह भारी,

नहि किछु चाही हमरा, हम छी अपने एक अधिकारी।।

धरि छौड़ासभ नहि किछु सुनलक,उठा-उठा कए पटकल,

देल दुहत्थी गरदनियआ पुनि सभ केओ पुछए लागल।

“कहू मिसरजी शेष रहल की? सेहो पूरा हम कए देब,

जल्दी बाजू-ठेंगा चाटी वा केवल गरदनिआ लेब।।

डरे थर-थर काँपि रहल छल,वरक हाल कहल नहि जाए,

एमहर खुरलुच्ची छौंड़ासभ,कलबल अपनहिमे बतिआए।

अपना जोग बिदाइ भेलनि,वर आबो लौटथु अपन गाम,

डेग बढ़ए नहि दुल्हाजीकेँ,सभ मिलि केलक चक्का जाम।।

१३।११।८१

## ३०

## अंगुलीमालक कथा

सत्य,प्रेम,करुणाक प्रमुखता,
सभ दिनसँ रहलै अछि।
ज्ञान,विराग,प्रीति केर सत्ता
नहि कहिओ घटलै अछि।

जखनहि धर्मक लोप भेल,
पापक प्रभाव बढ़ि गेल।
भगवानक अवतार भेल,
संकट देशक हटि गेल।

बुद्ध लेला अवतार जखन,
छल कलह व्याप्त सभठाम।
मानवताक उपदेश तखन,
कएलथि घुमि गामक गाम।

अंगुलीमाल भयसँ छल,
जिला,जबार आतंकित,

प्रतिदिन खून करै छल,
पथिकक सोनितसँ छल  रंजित।

राजा लग विनती करबा लए
पहुँचए लागल लोक ततेक।
जे राजा झट आगू बढ़ला
संग कएल छल सैन्य जतेक।

चारूकातक दृश्य तेहन छल,
जकर हाल कहल नहि जाए।
बजल नगाड़ा सेना बमकल,
सभ केओ अपनहिमे बतिआए।

अबस्स पकड़ि कए आनब ओकरा,
करब इलाकाकेँ हम शांत।
अंगुलीमालक भयसँ नहि,
रहत दुखित,क्लेशित प्रान्त।

ई सभ घटना बुद्धक चेला,
हुनकासँ चुप्पे कहि देल।
बड़ उदास भेला से सुनि-सुनि,

कहल हे राजा! ई की भेल।

एक व्यक्ति कतबो कठोर हो,
दुष्ट,निर्दयी,पापी हो।
धरि मात्र प्रेमक प्रभावसँ,
मनुक्खक चालि धरत ओहो।

कहल जे राजा व्यर्थ अहाँ,
उद्विग्न,अशांत रहै छी।
छोट-छीन एहि काजक भारा,
हम अपनेपर लै छी।

अंगुलीमालक करनीकेँ,
वर्णन करबाक प्रयोजन की?
गरजि उठल ओ देखि बुद्धकेँ,
अविवेकीकेँ डरे की?

बुद्ध छला ठामहि नहि,
कनीको ओ भयभीत भेलाह,
कहल मित्र जल्दी करू,
से कहि ठाढ़ ओतहि रहलाह।

देखि शांत गंभीर हुनक,
आकृतिसँ ओ घबराएल।
जे एहन स्थिर मनुक्ख तँ,
नहि छल कहिओ आएल।

पैर पकड़लक कानए लागल,
जे हमरासँ गलती भेल।
बुद्धक शांत विनीत भावसँ,
ओकर हृदय परिवर्तन भेल।

"बुद्धं शरणं गच्छामि"कए,
ओ बुद्धक चेला बनि गेल।
धर्मक नीतिक अनुयायी भए
भगवानक अर्चक बनि गेल।

२२।११।१९८१

## ३१

### उठू आबो,उठू औजी

ठोह पारि कए कानि रहल छथि,
माँ मिथिले धरि सुनतनि के?
मिथिला,मैथिल,मैथिलीक
सम्मानक रक्षा करतनि के?

भारतसँ नेपाल धरिक
जनता जकरा अपनओने अछि
विद्यापतिक मधुर संगीतकेँ,
सुस्वरमे जे गओने अछि।

से मैथिली किएक अखनहु,
कोबराघरमे झाँपल अछि
बेसीकेँ गप्प छोड़ि दिअ,
उचितो हक नहि पाओल अछि।

डागडर,अफसर,इंजीनियरकेँ
लाज होइत छै साफ कहएमे
अप्पन माएकेँ माए कहएमे

अप्पन भाषामे बाजएमे।

हे मैथिल किएक गुम्म भेल छी?
मैथिलीक अपमान सहै छी?
अपनहि घरमे अप्पन भाषाक
दुर्गति देखि ने किछु करै छी।

धरि एतबा सभ केओ सुनि लिअ,
मिथिलावासी ई बुझि लिअ
जे अप्पन भाषा छोड़ैत अछि
अप्पन आँखि अपने फोड़ैत अछि

ऊठू आबो,उठू औजी
ओझा ठाकुर औ मिसरजी
नहि पुरषार्थ अछि सहबामे
पाप ने अछि हक लए लड़बामे।

(सन् १९८१)

## ३२

## कंजूसक दुर्गति

कोनो गाममे एकटा बड़का धन्ना सेठ रहै छल,
ने छल ओकरा कमी कथुक तैओ फिकिर करै छल।
थाकक-थाक रूपैया गनि कए भूखले सुति रहै छल,
एक्को पैसा दान-पूण्य करबाक नाम नहि लै छल।।
खान-पान ओ आन काजमे करए महा कंजूसी,
पैसा आगू ने ओ सुनए,ककरो कानाफुसी।
एक दिन ओकरा घरक सभ केओ काशी चलि गेल,
एकसर ओ कंजूस बेचारा गामेपर रहि गेल।।
साँझ पड़ल कि गामक कुकुर सौंसे भुकए लागल,
चौकीदार डकै छल भैया रहिअह सभ केओ जागल।
बारह बजे रातिमे जखन सभ केओ फोंफ कटै छल
ओ कंजूस बेचारा घरक रखबारीमे भिड़ल छल।।
एतबहिमे दस-बीस गोटे पेस्तौल बढओलक आगा,
कड़कि-कड़कि अबाज देलक,जे खबरदार जो भागा।
सिटिर-पिटिर छल बंद,करथि की कुंजी खोलि बढ़ौलथि,
जन्म भरिक जे किछु कमाइ छल,क्षणे भरिमे गमौलथि। ।
बान्हि देलक हुनका खाम्हीमे,आँखिमे पट्टी से छल,

अपना भरि बोमी भरलथि धरि चोरबासभ छल चेतल।
भोर भेल तँ सौंसे गौँआ देखलक हुनकर हाल,
आएल दरोगा पुछए लागल,घटनाक्रम तत्काल।
सोन हराएल तँ दक्षिणा पुनि सोनेक लोक करैछ,
'इनक्वायरी'क फीस दरोगा सेहो फरके लैछ।
मरक मान भेल सेठजी कल जोड़ने ठाढ़ छलाह,
कहल दरोगा एहन केसमे करू ओकीलक तुरत सलाह़। ।
शेष छलनि जे किछु कंजूसक से ओकीलजी टानि लेलक,
भेल मोकदमा भारी हलुआ हुनकर सभ मिलि टैट केलक।।
(सन् १९८१ई०)

## ३३

## केहन जमाना आबि गेल अछि?

नव कनिआँ सभ घोघे तरसँ,
घरबलाकेँ सिखा रहल अछि,
बुढ़बा-बुढ़िआकेँ फराक कए,
देखू ठहाका पारि रहल अछि।

बुढ़बा बुढिआ आस लगौने,
मोसकिलसँ अछि जान बचौने,
नौकरी धेलकै जहाँ ने बेटा,
ओकर लेल सभटा घरनीटा।

नवतुरियाक हाल कहू की?
नव कनिआक बात करू की?
लाज धाख ककरा कहैत छै,
गरदनिया बुढ़िआकेँ दैत छै।

बुरिबक छला पुरनका लोक,
दैत छला गलतीपर टोक,
सभ केओ गुम्मी साधि लेने छै,
बस अपनेटा सँ मतलब छै।

रूपया पैसा छै जकरा संग,

पुछू नहि अछि तकर की रंग,

लोकोसभ ओकरे पाछा अछि,

जकरा पासमे किछु टाका अछि।

मुखिआ छी,सरपंच छी,जे छी,

चोर डकैत उचक्का जे छी,

जौँ टाका अपने रखैत छी,

तँ सभसँ बड़का अपने छी।

जकरा कथुक लूरि नहि सेहो,

दस हजार मगै अछि ओहो,

घरक निकलुआ नेता बनि कए,

बमकि रहल अछि आगू जे हो।

कलिजुग साफे झलकि रहल अछि,

बाप बेटामे पटि ने रहल अछि,

अपन बेगरते सभ आन्हर अछि,

केहन जमाना आबि गेल अछि?

## ३४

## चिट्ठी

हे चिट्ठी तूँ जाह

हुनका कहिअहुन

मोनक हाल

जे कोना राति भरि

हम तारा गनैत छी

कहिअहुन जे हम

हुनके  जिज्ञासामे

कहुना जीबैत छी

हे चिट्ठी जाह

कहिअहुन हुनका

ओ सभ बात

जे तोरेटा बूझल छह।

२।१२।१९८१

३५

**हम बाजू की नहि बाजू**

हम सोचि रहल छी प्राते सँ,
किए थेने अहाँ छी दाँतेसँ,
ओ रीति नीते जे धकलि देलक
अहाँकेँ एतबा पाछू।,,,

चलि रहल अहाँ छी नहू-नहू,
डर अछि नहि लागए ठेस कहूँ,
मर्यादा जे सड़ि गेल अछि,
ढो रहल किए छी बाजू।,,,

टाका जकरा छै सएह पैघ,
काबिल सभसँ बड़का बनैत,
से ताल ठोकि आगू बढ़ैत,
न्यायक लेने तराजू।,,,

सएटा खोपड़ी टूटि जखन खसैछ,
एकटा कोठा कतहु बनैछ,

शोषण समाजमे जे करैछ,
तकरे सभ आगू-पाछू।,,,

विद्यालयमे ओकरे प्रवेश,
जकरा जेबीमे टका बेस,
जकरा सिलेटक पैसा नहि,
ओ पढ़त कोना से बाजू।,,,,

की कारण जे सभ ओहिना अछि,
निर्धनता सभक बहिना अछि,
घर-घरमे  कलह किएक अछि?
यौ मिथिलावासी बाजू।,,,

गामे गामे सीता आकुल,
घर घरमे जनक थिका व्याकुल,
की टुटत धनुष पुनि एक बेर,
से मिथिलावासी बाजू।,,,

३६

## अन्तर्व्यथा

गुदरी बनल जिनगीकेँ,
एसगर जी रहल छी।
ककरा कही अन्तर्व्यथा,
नहि बुझि रहल छी।
हे विधाता कोन पापे,
कोपभाजन अहूँक हम छी
जे सभक हिस्सामे सुख कए,
कष्ट हमरा दए रहल छी।
जखन दुखसँ छटपटाएल,
रातिमे तारा गनै छी।
वज्र छाती अछि मनुक्खक,
सोचि से हम गुम रहै छी।
दीनतामे दुख बहुत,
मजबूर भए पाथर बनल छी,
अपन दुख ककरा कहू,
चुप्पे सभटा सहि रहल छी।
१५।११।१९८१

३७

## बूढ़क बिआह

पाग पहिरने डोपटा ओढ़ने छड़ी हाथमे ले ने,
पानक पीक फेकैत केसमे करिया तेल लगओने।
आगू-आगू घटक चलै छल,पाछू कंबल लेने,
नोकर चाकर बमकि रहल छल,समय कराबए जे ने ।।
सभा पहुँचितहि वरक पंखा नोकर चलबए लागल,
पानक पीकसँ सौंसे डोपटा,कुर्ता भिजए लागल।
एतबे मे दूटा खुरलुच्ची छौंड़ा दौड़ल आएल,
बूढ़क जोश देखि कए ओ सभ अपनेमे बतिआएल।।
करी उपाय तेहन जे बूढ़ा सबक सीखने जाथि,
केहन मजा अछि सभा करक से सोचि-सोचि लजाथि।
कनी कालमे रंग-विरंगक कन्यागत सभ अएला,
तिलक-दहेजक बात उठए कि सभ चुप्पे चलि गेला।।
बहुत काल धरि जखन कथा पटबाक उपक्रम नहि छल,
तखन व्यथित ओ चारूकातक दृश्य देखैत रहै छल।
एतबेमे  ओ छौंड़ा दुनू घटकराज संग आएल,
कहल हमर भगिनी बड़ सुंदरि बरख सोलहम लागल।।

कि ओहि बूढ़क मुँह जेना फोकसीन सन चमकए लागल,
कते पढ़ल छथि,कतए रहै छथि,पुछि पुनः ओ बाजल।
किछु नहि लेब दहेज करब आदर्श बिआह एतए हम,
ओना बुझी तँ कुल-शीलमे नहि ककरोसँ छी कम।।
बारह बाजल राति ठहरला गाम-घरसँ बाहर,
संगे रहनि पाँच बरियाती आ किछु नोकर-चाकर।
भोर होएमएपर भेल, चिड़ै चुनमुनसभ चहकए लागल,
की औ बाबू गौआँ घरुआ सभ गरजए लागल।।
एक-एक कए सभ केओ हुनके क्रमशः घेरए लागल,
सौंसे गामक महिषबारसभ,लाठी लेने आएल।
नोकर-चाकर सभ केओ भागल,बूढ़कें दाँती लागल,
होश भेलनि तँ अस्पतालमे देखलनि डागडर लागल।।
८।१०।१९८१

## ३८

## प्रेम

एहि क्षुद्र जीवनमे,
प्रेम ओ वस्तु अछि,
जे केहनो कठोरकेँ,
मोम कए दैत अछि।
असीम एहि दुनिआक
वन्धन विधान अछि,
जीवनक समस्याक
इएहटा निदान अछि
दुनिआक सभ ठाठ बाट,
एकरा लग व्यर्थ अछि,
जीवनकेँ पुछी तँ,
एतबहिटा अर्थ अछि।
ताज महल अखनो ई,
खिस्सा कहैत अछि,
प्रेम जे करैत अछि ,
से नहि मरैत अछि।
१८।११।

## ३९

## विछोह

उमर भेल भारी करू की लचारी
बीति गेल वर्षो ने केलनि पुछारी।
केहन छी अहाँ दर्द कनिको ने बुझलहुँ,
विरह वेदना दए एहन हाल केलहुँ।
हमर हाल पाहुन देखू भेल केहन
बारह बजे फूल मुरझाएल जेहन।
कहू कोन पापे देलहुँ दर्द भारी,
तकिते रहल बाट हम छी बेचारी।
कोना कए बिसरलहुँ अहाँ बात ओ सभ
वृथा किए कहल होएत नहि किछु दुर्लभ।
आँखिक नोर बहैत अछि केहन
साओनक मेघ झहरैत जेहन।
जखने कतहु गीत केओ गाबै कतहु अछि
अहींक मधुर ध्वनि सुनाइत ओतहि अछि।
जखनहि हमर हाल पुछलथि बहिना
बढ़ल दर्द धधरा बढ़ए घी सँ जहिना।

(१९८१ई०)

## ४०

## अनाहूत

जेठक दुपहरियामे
पीपरक गाछ तर
असोथकित बैसल छलहुँ
एतबे मे केओ अनाहूत
हमरे इसारा कए
किछु कहि रहल छल
"जे हम दुखक झंझावातसँ दग्धमय
सुखक अन्वेषणमे
तोरे देहसँ बहरायल छलहुँ
मुदा एहि अर्थयुगमे
अभावक चक्रव्युहमे ओझराएल
पुनः तोरे शरीरमे प्रवेशक लेल
चेष्टा कए रहल छी।"
हमर अतिरुग्न तन
अपने प्राणसँ डरि रहल छल
जे एकर पुनरागमनसँ
दुखक नूतन शृंखला प्रारंभ होएत

कहि उठल-

“ठामहि रहह,हम बिदा छी।”

(१९८१ई०)

## ४१

### एकटा अभिशाप

गरीबी एकटा अभिशाप अछि,
जाहिसँ मनुक्खक सभ कामना,
कष्टक ज्वालामे आहूति सन,
धधकैत अछि,जरि जाइत अछि।

सुखक संवेदना मरीचिका सन,
निर्धनक खरिहानमे अभरैत अछि,
आशाक अभिनव रूप सऔनक रौदसन,
उगैत अछि,डूबि जाइत अछि।

पूषक पूरबामे ठिठुरैत जाड़मे,
जेठक दुपहरियाक कड़कैत रौदमे,
भादवक बरखा कथुक नहि सोच कए,
जीविका हित ओ रहै अछि कर्ममय।।

तद्यपि ज़ठराग्निक ज्वालामे जरै अछि,
धनिकक तगादा वज्रसन सदिखन सहै अछि,

सभ कष्ट सहितहुँ जीवनक रक्षाक हित,
विषपान ओ अपमानकेर सदिखन करै अछि।

१४।११।१९८१

## ४२

### अर्थतंत्र

दुपहर रातिसँ
ककरो आवाहन कए
उद्विग्न भावसँ
स्वागतमे ठाढ़ छलहुँ
की हमर आवाहन मंत्रक कोनो पाँति
गड़बड़ भए गेल छल?
जे आहूत आगन्तुक
हमरा देखितहि
पाछूए हटैत गेल
आर ओ कहैत गेल
जे एहि आवाहनकेँ
आविष्ट करबाक लेल
अर्थक प्रयोजन अछि
कारण सभ मंत्र,तंत्र
एहीसँ जोड़ल अछि।

(१९८१ई)

## ४३

## अर्थहीन

सीमरक गाछपर
पंछी रहैत छल,
मोनक आवेगकेँ
चुप्पे रखैत छल,
ने ओ डरैत छल,
ने ओ हटैत छल,
लोकक व्यवहार देखि,
हँसि कए सोचैत छल,

यद्यपि तूँ विज्ञ छह,
मनुक्ख कहबै छह,
उपकारक नामपर,
सभ किछु करैत छह।
तद्यपि ओ अर्थहीन,
क्रमशः भए जाइत अछि,
कारण ओ स्वार्थेसँ,
प्रेरित बुझाइत अछि।

## ४४

## अहींक मरजी

हमर जीवन

हमर सभ कामना,

हमर इच्छा हमर सभ भावना

हे शृष्टिकर्ता!

अहींक मरजीपर बनल अछि,

चलि रहल अछि।

हम हारि,

भागक चोटसँ छटपटाएल,

भावीक पसरल जालमे लटपटाएल,

किंकर्तव्य भए

अज्ञात दुर्गम मार्गपर

चलितहि रहल छी

सभ किछु अहींक माया,

अहींक विस्तार अछि,

से सोचि हे प्रभु!

कष्ट हँसि हँसि सहि रहल छी।

(१९८१)

## ४५

## आजुक नेता

सफर करै छथि हबाइ जहाजमे,
भोजन करै छथि,होटल विलासमे।
तैओ गरीबक नेता कहबै छथि,
चिकरि छिकरि कए भाषण करै छथि।।

जनता बेचारा भुखे मरै अछि,
महगीक मारिसँ छटपट करै अछि।
नेताजी सेवक सरबत पीबै छथि,
भाषणमे महगीपर कसिकए बजै छथि।।

जनता तबाह छल,आबो तबाह अछि,
बड़को गृहस्थकेँ लागल बेसाह अछि।
कानूनक घूरछी,तेहन गहींर अछि,
जे ओ गरीब लेल,साफे बहीर अछि।।

तेहन बिहाड़ि एहि  देशमे बहैत अछि,
जकरा ने लुरि कथुक नेता कहबैत अछि।
जनताकेँ देखबए लेल खोपड़ी बन्हैत अछि,
दिल्लीमे ओएहसभ कोठा पीटैत अछि।।११।१०।१९८१

## ४६

### **एकटा प्रश्न**

मृत्युःएकटा प्रश्न अछि
जकर बाद  सभ जिज्ञासा,
शांत भए जाइत अछि
मुदा ई प्रश्न ठामहि रहि जाइत अछि।
जीवनःओही महाप्रयाणक
चेष्टा तँ नहि अछि?
अहंसँ प्रेरित हमर रचनासभ,
मिथ्या तँ नहि अछि?
मुदा एहि प्रश्नसँ स्फुरित
जिज्ञासा केओ नहि बुझैत अछि,
उनटे एहि सत्यकेँ
विस्मृत कए दैत अछि।

११।१०

## ४७

## जीवन की अछि?

हमर अहाँक जीवन

पानिक बुलबुला जकाँ

टन दए रहि जाइत अछि

कारण हमरालोकनिक

जीवनक समस्त कामना

सुख आ दुख एकटा राहु बनल

हमरे जीवनकेँ सौंदर्यक

आभामे प्रतिविंबित शशिकेँ

क्रमशः गिड़ि जाइत अछि

तेँ हे मित्रवर सुनि लिअ

जे करबाक अछि से कए लिअ

किएक तँ ई देह फेर माटिकेँ

वापस भए  जाइत अछि।

## ४८

## पत्र छी हम

मनुक्खक भावनाकेँ
चुप्पे हजारों कोस धरि
पहुँचा रहल छी
प्रियवर पत्र छी हम।

वियोगक व्यथासँ विक्षुब्ध
केओ मरनातुर जखन
हृदयमे टीस बढ़ि कए
असह्य बनि जाइत अछि जखन
तँ कागतपर आखरसँ अंकित
भावना छी हम।

कतहु परदेशमे कमासुत
जाहि बापक होअए
घरक हालति बिसरि
अपनेमे लागल होअए
तेहन भसियायल संततिकेँ
तगादा टका लै छी हम।

बीए एमए केने छथि जे

बेरोजगारीक मारल छथि

वर्षक वर्ष बेकारीसँ

जे झमारल छथि

तिनका नौकरीक सूचना दए

नूतन जिनगी दै छी हम।

जेना कोनो गाछक

सभटा पात झड़ि गेल होअए

नव किसलय चतुर्दिक

पसरि बढ़ि गेल होअए

प्रवासी लोककेँ हाथे

तेहने हरियरी छी हम।

२१।९।१९८४

## ४९

## पैसा

जीवनसँ मृत्यु धरि

ओकरे पसार अछि।

एकरे लेल पढ़लोसभ,

बनि गेल गमार अछि।

बुझि नहि रहल केओ जे,

ओ एक इन्सान अछि।

पैसोसँ बढ़ि-चढ़ि

मनुक्खक इमान अछि।

मनुखक संतान देखू,

भेल रक्तबीज छथि,

पैसेकेँ बुझि रहल,

ओ सभ चीज छथि।

चारू दिस केहन ई,

चहल-पहल व्याप्त अछि,

पैसाक आगूमे,

केओ नहि आप्त अछि।१८।११।१९८१

## ५०

## प्रत्याशा

हम आओर अहाँ
समानान्तर रेखा सन
की कहिओ नहि एक होएब?
मुदा हमर आत्मा मरलोपर
अहींक परिसरमे
अहींक आवाहन कए
अहींसँ मिलनक प्रत्याशामे
जीवन मरणक बीच रेखाकेँ तोड़ि कए
अहीं संग एक भए जाएत।
एही परिकल्पनासँ
हम जी रहल छी
जे मरिओ कए हम
अपन कल्पनाकेँ
साकार कए सकै छी।
आर ओ मिलनक क्षण
कल्पनाक भूतलपर अवस्थित
आदर्शविंदु होएत।

जतए समानान्तर चलनिहार

रेखाक सम्मिलन

संभव भए जाइत अछि।

१६।१२।१९८१

## ५१

### बिहान

भए गेल देखू बिहान।
यौ अहाँ सुतले रहब,कि हमरो सुनब?
अहाँ चुप्पे सभ क मारि सहिते रहब।
कि ताकब एकर किछु निदान?.....

देश आगू बढ़ल,लोकसत्ता बनल।
केओ मंत्री बनल,केओ कोठा पीटल।
धरि टूटि गेल अहाँक मचान।.....

रेलगाड़ी चलल,टेलीविजन बनल।
जकरो ने लुरि छल,एमएलए बनल।
अहाँ टपलहुँ ने गामक सीमान।....

नित्य मेहनति करी,तैओ भुखले रही।
बात सभहक सुनी,तैओ गुम्मे रही।
कोना अहाँ भए गेलहुँ बेजान?....
(१९८१ई०)

## ५२

### वसंतागमन

आयल मधुरिम मधुमास,
हृदयमे प्रीति राग उपजए लागल।
महमह करैत सरिसव,तीसी
नूतन परिधान पहिरि आएल।।
जकरे देखू से अछि व्याकुल,
संयमक शील विखंडित अछि।
रस पी पी सभ छथि मस्त भेल,
कण-कण जीवनसँ झंकृत अछि।।
हे प्रकृति प्रिया तोहर आनन,
श्यामल कण-कणमे कोमलता।
महमह करैत सौंसे धरती,
पसरल चारूदिस प्रीतिलता।।
आहे वसंत ऋतु स्वागत अछि,
प्रिय कामदेव छथि आबि गेल,
कामक मंथनसँ व्यथित भेल,
हृदयक धरकब द्विगुणित भेल।।

## ५३

## संकल्प

अहींक अनुपम रूप,
जीवन ज्योति बनि,
चमकैत अछि।
अहींक सुख-दुख,
जीवनक उद्यानमे,
महकैत अछि।
हे हमर चिरसंगिनी!
अहींक मधु मुस्कानपर,
हम जी रहल छी।
अहींक पावन कल्पनाकेँ
जीवनक संकल्प कहि
हम चलि रहल छी।

१३।११।१९८१

## ५४

## ककरा कहू

ककरा कहू,हम की करू

केओ नहि सुनि रहल ।

आन्हर बनल ई दुना,

देखितहि हमर दशा,

अपनहिमे सभ रमल अछि

पीने जेना निसाँ

जीवन अन्हार गुज्ज सन,

किछु नहि सुझि रहल अछि।

कष्टेमे बीति गेल,

सुखक समय हमर

जीवनक हित अपमानकेँ

पीलहुँ कते जहर।

मिथ्या थिक ई लोक,अछि बात ई असल।

५५

## प्रवासीक दर्द

जतए जन्म लेलहुँ

जतए एहि पृथ्वीपर

पहिल बेर साँस लेलहुँ

आँखि खोललहुँ

जतए माता-पिताक

अनन्त सिनेह भेटल

जाहिठामक माटि-पानिमे बढ़लहुँ

वालसखासभक संग

कबड्डी,चिक्का आ गेन खेलेलहुँ

ब्रह्मस्थानमे भट्ठा धेलहुँ

जतएसँ पढ़ि हम मिडिल,हाइइसकूल आ

कालेजोमे किलासक-किलास

फनैत चलि गेलहुँ

जाहि गामक लोकसभ

हमरा ओतेक मानैत रहलाह

निरंतर प्रेरित करैत रहलाह

नान्हिटासँ मनोबल बढ़बैत रहलाह

सिनेहसँ हमर हृदयकेँ
मजगूत करैत रहलाह
जतए सालक-साल पूजनीया माए
प्रतीक्षा करैत रहलीह
जे कमासुत बेटा
जल्दीए गाम वापस आएत
सदिखन एकपथिआ आशीर्वाद
हमरा दैत रहलीह
जाहिठामक माटिमे
पुरखाक हड्डी गड़ल अछि
जाहि जन्मभूमिक चर्च हम
दिन-राति करैत छी
जकरा एकहु क्षण
नहि बिसरि पबैत छी
अहीं कहू
से हमर कोना नहि अछि?
मुदा ई सभ ककरा कहू?
जखन रक्षके भक्षक बनि जाएत
प्रवासी केना लौटि घर आएत?
केओ झंझटिमे किएक पड़त?
सत्ते ओ बजैत रहैत अछि

ताकि लिअ एहिगाममे

नहि भेटत एकहुटा पंच

पंच आब अछिए के?

सभ अपन जान बँचा रहल अछि

सभकेँ पता अछि

जे गाममे आब ककर राज छैक

सज्जनसभ गाम छोड़ि देने अछि

जे अछिओ से बौक बनि गेल अछि

ई कोनो एक-दू घरक बात नहि अछि

जे केओ गाम रहि गेल

सएह बहरिआ लेल

भए गेल काल अछि

सुनैत छी आब ओहिठाम लगीच धरि

हवाइ जहाजो जाइत अछि

मुदा ताहिसँ की?

लगीचमे रहलेसँ होएत की?

हवाइ जहाजसँ उतरि तँ जाएब

मुदा पैर धरब कतए?

ककरासँ भेंट करब?

के हाल-चाल पुछत?

माए-बाबू,संगी-साथी सभ चलि गेलाह

आ जे छथि तिनकर हाल की कहू?

फोनोपर गप्प करएसँ डराइत छथि

किछु नहि फुराइत अछि

जे की करू?

अहीं कहू एहन हालमे

जन्मभूमिक रक्षा कोना करू?

1.6.2022

## ५६

## कन्यादान

कते दिनसँ आश लगौने,एड़ी चोटीकँ एक केने।
बाप बेचारा ताकि रहल अछि,बेटी लेल वर रने-बने।।

सभा गाछी ओ कए बेर गेला,पूरब-पश्चिम सौंसे केला।
गामक गाम घूमे फिरि अएला,वरक बाप ने कतहु पसीजला।।

सायकल,घड़ी,रेडियो चाही,ऊपरसँ फटफटिया चाही।
लाख टकाक तिलक चाही,कहू बेटीकँ केना बिआही।।

कलम बेचलहुँ,पोखरि बेचलहुँ,,गहना,गुड़िया बन्हकी धेलहुँ।
एकहि कन्यादानक खातिर,नोकरीयोसँ हाथ धो लेलहुँ।।

मिथिलावासी आबो सोचथु,बचल खुचल घर आब ने लुटथु।
कन्यादान करक छै जकरा,तकरो किछु मजबूरी बुझथु।।

## ५७

### जीवन संघर्ष

**(१)**

सूर्य जे प्रातः उगल से विदा छल,
चिड़ै चुनमुन उतरि कऽ आकाशसँ,
निश्चिंत भावे गवै  छल-
"जे करी विश्राम दिन आवशेषपर अछि।"

(२)

मुदा ओ हाथसँ पाथर फोड़ै छल,
भोरेसँ संघर्षरत जीविका हित,
सोनितक विक्री करैछल,
कुहरितहुँ साँझो पड़ल ,धरि ओतहि छल।

(३)

पेट,अँतरी,पीठमे अंतर खतम छल,
दाँत झड़ि कए मुँहकेँ खधिआ केने छल,
आँखिमे धसना धसल छल,आहार बिनु,
हाड़ोक हड्डी गलि रहल छल।

(४)

से कहि रहल छल, बातमे पीढ़ा भरल छल,
अतिशय तृषित मनदग्ध,देहक दुर्गति छल,

जे हमर जीवन कुटिल ओ क्लिष्ट केहन,
यद्यपि करी श्रम अनवरत धरि हाल एहन,

(५)

हे मनुज तोँ उठह आबो आँखि खोलह,
देखह ने कोनो भेद अछि,प्रकृतिक कोनो आयाममे,
तद्यपि सुखक मारिचिकामे,विसरि जे तोँ मनुक्ख छह,
अपने सोनित मोहवश गट-गट पीवै छह।

(मिथिला मिहिर, पटना मे २५ जुलाइ १९८२क प्रकाशित)

## ५८

## जरूरी अछि एकटा आओर शिवक

जहिना समुद्रकेँ मथल गेलेक
तँ निकललैक अमृत आ विषो
देवतासभ पीबि लेलनि अमृत
आ भए गेलाह अमर
मुदा हालाहल पीबाक लेल
केओ तैयार नहि रहए
सभ अपन-अपन जान बचबएमे
लागि गेल रहए
लागल जे आब नहि बाँचत शृष्टि
संहार भए कए रहत
तँ आगू अएलाह महादेव
पीबि गेलाह हालाहल
आ दिओलनि सभकेँ त्राण
बनि गेलाह नीलकंठ
सतत पूजनीय
सभ करए लागल आराधना
महादेव महादेव

तहिना एहि जुगमे

अमृत कलश चोरा लेलनि

समाजक शीर्ष पुरुष

आ उपेक्षित वर्ग विवश छथि

हालाहल पीबाक लेल

कारण केओ नहि बाँचल छथि

जे पीबि सकथि आजुक हालाहल

जे उपजल सामाजिक संघर्षक

घात-प्रतिघातसँ

कएल गेल छथि वंचित सभ तरहेँ

सम्मान,सुविधा आ समाजमे उचित स्थानसँ

ताहि लेल जरूरी अछि

एकटा आओर शिवक

जे सभ किछु विसरि

पीबि जाथि सभटा मान-अपमान

आ लड़ि सकथि न्यायार्थ

जाहिसँ ओहोसभ

पाबि सकथि वाजिब हक

आ जीबि सकथि सम्मानपूर्ण जीवन

ताहि लेल जरूरी अछि

जे टूटि सकए

जाति-पाँजि आ धर्मक नामपर

पसरि रहल समस्त विवाद

सभ कहि सकए एक स्वरसँ

जे हमसभ छी मनुक्खक संतान

मात्र मनुष्यते अछि

आ सदिखन रहत

हमर पहिचान।

**लेखक परिचयः**

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

**जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)**

**२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)**

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्धिआ ड्योढ़ी

वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक

विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

१. ‘भोरसँ साँझ धरि’ (आत्म कथा),

२.‘प्रसंगवश’ (निवंध)

३.‘स्वर्ग एतहि अछि’(यात्रा प्रसंग),

४. ‘फसाद’ (कथा संग्रह)

५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास)

६. विविध प्रसंग (निवंध )

७.महराज(उपन्यास)

८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)

१०.समाधान(निवंध संग्रह)

११.मातृभूमि(उपन्यास)

१२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

१३.शंखनाद(उपन्यास)

१४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास)

१६.पाथेय(संस्मरण)

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास)

१८.प्रलयक परात(उपन्यास)

१९.बीति गेल समय(उपन्यास)

२०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

२३. संयोग(कथा संग्रह)

२४.   नाचि रहल छलि वसुधा  ( उपन्यास)

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास)

२६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास)

२७.पटाक्षेप(उपन्यास)

२८ माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग)

२९ जयतु जानकी(उपन्यास)

३० यज्ञसेनी(उपन्यास)

३१.कथा अखन बाँकी अछि(संस्मरण)

३२.  गाछ बजैत छैक(कथा संग्रह)

३३.सूर्यपुत्र(उपन्यास)

३४ बिसरि जाएब जरूरी छै(कविता संग्रह)

In English: -

1. The Lost House (Collection of short stories)

2. Life is an art

3.The Ganges Whispers (English translation of my Maithili Novel,Ham Aabi Rahal Chhee (हम आबि रहल छी)

हिन्दी में –

१.न्याय की गुहार

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)( पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

https://bit.ly/4ogK2jQ

पटाक्षेप(उपन्यास)

https://bit.ly/4qAZ99l

जयतु जानकी(उपन्यास)

https://bit.ly/3LLCXq7

यज्ञसेनी(उपन्यास)

https://bit.ly/4oLqnZl

सूर्यपुत्र(उपन्यास)

https://**bit.ly/3JG4oUL**

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।